

B.A part-2

Paper-3

Unit-2-

TOPIC - SOILS OF
INDIA

By- Lalit Sagar

भारत की मृदा प्रदेश

- प्रश्न: 1. भारत को प्रमुख खरा प्रदेशों में वर्गीकृत कर उनकी विशेषताओं का विवरण तथा संसाधनात्मक महत्व की समीक्षा करें
2. भारत में जलोढ़ मृदा विवरण, विशेषता एवं संसाधनात्मक महत्व।
3. भारत में काली मृदा विवरण, विशेषता एवं संसाधनात्मक महत्व।
4. भारत में लाल मृदा विवरण, विशेषता एवं संसाधनात्मक महत्व।

उत्तर: - मृदा का तात्पर्य महाद्वीपीय भू-पटल के उस उपरी मूल से है जो क्रयुसरित कणों की लंबी अवस्थिति आयता विक्षेप से निर्मित है। सामान्यतः इसकी संरचना क्ले, सिल्ट एवं बालू की होती है। वे सभी असंशुद्ध अवस्था में होते हैं। क्रयुसरित चट्टानों के अवस्थित इसके घटकों में बल, वायु, सूर्य की किरणें तथा द्रव्यस्य प्रमुख हैं। मृदा की जहराई और संरचनात्मक विशेषताओं में प्रादेशिक भिन्नता पाई जाती है। संरचनात्मक विशेषताओं से ही रंग और मृदा का संसाधनात्मक महत्व निर्धारित होता है। भारत जैसे विविधता के विशाल देश में मृदा की विशेषताओं में प्रादेशिक विभिन्नता का पता जाना एक स्वाभाविक मुद्दा है। इसी विविधता को आधार मानकर अनेक भूगोलवेत्ताओं और मृदा विशेषज्ञों द्वारा भारतीय मृदा के वर्गीकरण का कार्य किया गया है। इस संदर्भ में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (आई. सी. ए. आर.) का कार्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस परिषद् द्वारा ^{1956 ई०} संरचना, संघटन, रंग और कार्बिक दृशता के आधार पर भारतीय मृदा को निम्नलिखित ढाँठ कर्षों में विभाजित किया गया है—

- (1) जलोढ़ मृदा प्रदेश
- (2) लाल " "
- (3) काली " "
- (4) लैंगसोड " "
- (5) वनीय " "
- (6) लालीय मृदा / अलकलाइन मृदा
- (7) मानसूनीय मृदा
- (8) पतित / अर्धिक मृदा

(1) **जलोढ़ मृदा प्रदेश** :- इसके क्षेत्रगत लम्बाई 7.7 लाख की कि०मी० अर्थात् भारत का 24% भौगोलिक क्षेत्रफल आता है। यह अक्षीय (Azonal) मृदा है। यह निक्षेपित मृदा है और इसके निक्षेपित घटकों का क्रयुसरण किसी अन्य प्रदेशों में हुआ है। इसे अपभ्रत के द्वारा के द्वारा बनाया गया है। संसाधनात्मक दृष्टि से जलोढ़ मृदा को तीन प्रमुख कर्षों में विभाजित किया गया है—

(i) खादर जलोढ़

(ii) बाँजर जलोढ़

(iii) बाँकर जलोढ़

खादर नवीन जलोढ़ है। ये ताद के मैदान की विशेषता है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार के मैदान, पश्चिम बंगाल, असम, माली, त्रिपुरा, नागालैण्ड, मणिपुर, मेघालय, ओरिशा, आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, तमिल नाडु, केरल, आदि प्रदेशों में लघु-मध्यम प्रवाह के प्रभाव से युक्त निक्षेप का कार्य होता है। इसमें क्ले की प्रधानता होती है। नवीन सदा होने के कारण यहाँ उपजाऊ होते हैं। खादर, मृदा क्षेत्र के मध्य-महान्तर बाँजर प्रमुख निक्षेप भी विकसित होते हैं। ऐसे क्षेत्र को दिवारा प्रदेश कहा जाता है। लेकिन यदि पुराने नदी के मार्ग में जलोढ़ हो तो उसे बाँजर प्रदेश कहा जाता है। क्योंकि नदी के पीछे आते क्ले पत्र से निक्षेप का कार्य हुआ हो तो इसे गल मैदान कहा जाता है।

बाँजर मृदा प्रदेश : - इस मृदा का विकास मुख्यतः पश्चिम उत्तर प्रदेश और पंजाब के मैदान में हुआ है। पूर्वी तटीय मैदान की ऊपरी भाग (विशुद्धता के पश्चिम) में भी बाँजर मृदा का निक्षेप हुआ है। इसमें क्ले, बालू, सिल्ट तीनों मिश्रित होते हैं। क्ले से कम दो प्रकार के क्ले के मिश्रित होने के कारण ही इसे दोमत मृदा भी कहा जाता है। ये मृदा काफी उपजाऊ होती है एवं खाद की सहायता का होती है।

बाँकर मृदा - यह मृदा मॉर्ट प्रोडम की विशेषता है। नवीन मैदान में ये मृदा नहीं पाई जाती है। इसमें क्ले भी होती है। कहा जाता है। इसमें कम मात्रा में आर्सेनिक अणु होते हैं जो कारण यह जैसे फसलों के लिए अधिक अनुकूल है जो पूर्वोक्त मृदा के नगी पद आधारित है। तदनुसार यह क्षेत्र जलवायु और जल के लिए प्रसिद्ध है।

उपर वर्णित जलोढ़ मृदा के अतिरिक्त

गाल जलोढ़, काली जलोढ़ और लैंग्राइट जलोढ़ मृदा भी पठारी भागों के कई क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये ये मृदा हैं जिसका सौरज्वाल स्रोत क्रमशः आर्किक, बसाल्ट और लैंग्राइट चट्टानों से निर्मित है। लघु-मध्यम प्रवाह की उपस्थिति मुख्यतः कावेरी एवं बेंगाल नदी की बाढ़ों में देखने को मिलती है। काली जलोढ़ की उपस्थिति तमिल, केरल, नागालैण्ड और तमिल नदी घाटी प्रदेश में देखने को मिलती है। लैंग्राइट जलोढ़ मुख्यतः केरल तटीय प्रदेश तथा भारतवर्ष राज्य के संथाल परगना प्रगण्डन में छोटी-छोटी नदियों के इन में देखने को मिलती है।

भारत का जलोद मैदान समान मैदानी स्मनाकृति की विशेषता है। उत्तरी भारत के मैदान में तो कहीं-कहीं इस विशेषता की अलग-अलग 6 कि०मी० तक है। लेकिन द० भारत के जलोद मैदानों में तुलनात्मक दृष्टि से हिंदी मैदान या शैली में जलोद की विशेषता है। भारत की जलोद सदा में नाइट्रोजन एवं द्रुमस की मात्रा पर्याप्त नहीं होती है, पर पोषण एवं चुने की मात्रा अधिक होती है। जलोद मैदान के साथ साथ पीतल एवं चुने की बहुलता के कारण यह सदा प्रायः सभी फसलों के लिए अनुकूल है। जलोद के अधिकतर चावल एवं गेहूँ इसी सदा पर पैदा किए जाते हैं। यह मैदान पुरा, चाय, दलहन तथा तेजस के लिए विशेष महत्व रखता है। दाल के पौधों में अन्तु और काले की कृषि में तेजी से वृद्धि हुई है। इस सदा की सबसे बड़ी कमी है कि इसमें नाइट्रोजन का अभाव है। इस समस्या की दूर करने के लिए भारत में नाइट्रोजनकृत रासायनिक उर्वरकों के कार-खानों की विकास में भारी वृद्धि हुई है।

(ii) लाज सदा :- लाज सदा के औसत 5-2 लाख वर्ग कि०मी० क्षेत्र व्यापक जाता है। यह सदा प्रायशः भारत की विशेषता है। यह एक क्षेत्रीय सदा है। इसी शब्दों में यह सदा है जिसका विकास नहीं हुआ है। आधारभूत चट्टानों के खनिज गुण और सदा के खनिज के गुण एक समान हैं। इसमें लोहे की प्रधानता होती है और इसी कारण से इसका रंग लाल होता है। इस सदा के भौगोलिक वितरण देखने से यह स्पष्ट होता है कि इसका विकास उन्हीं क्षेत्रों में हुआ है जहाँ आर्कियन, प्रोमाइड, प्रोमाइड या अन्य प्रकार की चट्टानें पायी जाती हैं। भारत में धारवाड सँरचना का क्षेत्र लाज सदा के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

भारत में लाज सदा का सर्वाधिक क्षेत्रफल तमिळनाडु में है। राज्य के लगभग 2/3 क्षेत्रों में लाज सदा अथवा लाज जलोद सदा पाया जाता है। इस सदा के अन्य क्षेत्रों में केरल के पट्टर, जीवा राज्य के अधिकतर क्षेत्र, आंध्र प्रदेश के रायल सीमा तट, दण्डकारण्य पट्टर, मध्य प्रदेश में दूर्ग, बालाघाट और उनाखिपर जिला, छत्तीसगढ़ में बस्तर जिला, पूर्वी राजस्थान और मध्याह्न में रतनागिरि जिला, केरल में वाकनगौर पहाड़ी क्षेत्र तथा आरखण्ड, उड़ीसा में लाज सदा की बहुलता है। मेघालय और नागालैण्ड में भी अत्र-त्र लाज सदा क्षेत्र पाये जाते हैं।